

घर का भेद/दो साँप

एक नगर में देवशक्ति नाम का राजा रहता था। उसके पुत्र के पेट में एक साँप चला गया था। उस साँप ने वहीं अपना बिल बना लिया था। पेट में बैठे साँप के कारण उसके शरीर का प्रति-दिन क्षय होता जा रहा था। बहुत उपचार करने के बाद भी जब स्वास्थ्य में कोई सुधार न हुआ तो अत्यन्त निराश होकर राजपुत्र अपने राज्य से बहुत दूर दूसरे प्रदेश में चला गया। और वहाँ सामान्य भिखारी की तरह मन्दिर में रहने लगा।

उस प्रदेश के राजा बलि की दो नौजवान लडकियाँ थीं। वह दोनों प्रति-दिन सुबह अपने पिता को प्रणाम करने आती थीं। उनमें से एक राजा को नमस्कार करती हुई कहती थी, "महाराज ! जय हो। आप की कृपा से ही संसार के सब सुख हैं ।" दूसरी कहती थी, "महाराज ! ईश्वर आपके कर्मों का फल दे।" दूसरी के वचन को सुनकर महाराज क्रोधित हो जाता था। एक दिन इसी क्रोधावेश में उसने मन्त्रि को बुलाकर आज्ञा दी, "मन्त्रि ! इस कटु बोलने वाली लडकी को किसी गरीब परदेसी के हाथों में दे दो, जिससे यह अपने कर्मों का फल स्वयं चखे।"

मन्त्रियों ने राजाज्ञा से उस लडकी का विवाह मन्दिर में सामान्य भिखारी की तरह ठहरे परदेसी राजपुत्र के साथ कर दिया। राजकुमारी ने उसे ही अपना पति मानकर सेवा की। दोनों ने उस देश को छोड़ दिया।

थोड़ी दूर जाने पर वे एक तालाब के किनारे ठहरे। वहाँ राजपुत्र को छोड़कर उसकी पत्नी पास के गाँव से घी-तेल-अन्न आदि सौदा लेने गई। सौदा लेकर जब वह वापिस आ रही थी, तब उसने देखा कि उसका पति तालाब से कुछ दूरी पर एक साँप के बिल के पास सो रहा है। उसके मुख से एक फनियल साँप बाहर निकलकर हवा खा रहा था। एक दूसरा साँप भी अपने बिल से निकल कर फन फैलाये वहीं बैठा था। दोनों में बातचीत हो रही थी।

बिल वाला साँप पेट वाले साँप से कह रहा था, "दुष्ट ! तू इतने सर्वांग सुन्दर राजकुमार का जीवन क्यों नष्ट कर रहा है?"

पेट वाला साँप बोला, "तू भी तो इस बिल में पडे स्वर्णकलश को दूषित कर रहा

है।"

बिल वाला साँप बोला, "तो क्या तू समझता है कि तुझे पेट से निकालने की दवा किसी को भी मालूम नहीं। कोई भी व्यक्ति राजकुमार को उकाली हुई कांजी की राई पिलाकर तुझे मार सकता है।"

पेट वाला साँप बोला, "तुझे भी तो गर्म तेल डालकर कोई भी मार सकता है। "

इस तरह दोनों ने एक दूसरे का भेद खोल दिया। राजकन्या ने दोनों की बातें सुन ली थीं। उसने उनकी बताई विधियों से ही दोनों का नाश कर दिया। उसका पति भी नीरोग हो गया, और बिल में से स्वर्ण-भरा कलश पाकर गरीबी भी दूर हो गई। तब, दोनों अपने देश को चल दिये। राजपुत्र के माता-पिता ने उनका स्वागत किया।

५१ का छंद/र मेष

एक नगर भद्रवैमक्तिनाम का राए ररुडा था। उमक पेटु क पेटे भौरक भापे गला गया था। उम भापे न वेकी मपन गिल गन लिखा था। पए भद्रवैमेष क केरर उमक मेरीर का पडि-मिन बघ रुठे र ररुडा था। ररुड उपाचार करन के गेर ही एग मद्रुमभ केरै मणार न रुमु उ उ मउरुनिराम रुकेर राएपडु मपन राए मउरुडु ररु ररुमर पएमे भगला गया। उर वरु भाभानृशिपारी की उरु भनिरु भरेरुन लेगा।

उम पएमे क राए गलि की रने एवन लरुकिरर घी। वरु रने पडि-मिन मरुडु मपन पिडा के पूरुम करन मुडी घी। उनभभौरक राए कनेभभद्रु करडी रुं करडी घी, "भरुगए! एव को मप की कृपा मकी मभार क मेर माप को। ररुगी करडी घी, "भरुगए! रमा वर मपक केरुकेरु डल री। ररुगी क वेगन क भेनकर भरुगए कृणुड रुएडु था। एक दिन उमी कृणुवम भ उमन भेनिरुकेरुलाकर मुल्ल री, "भनिरु! उम कए गलेन वेली लरुकी क किमी गरीग पररुमी क काष भेरे र, एमभ वेरु मपन केरुकेरु डल मल्ल गपा।"

भनिरुने राएरु म उम लरुकी का विवरु भनिरु भभभानृशिपारी की उरु रुं पररुमी राएपडु क भाष कर दिया। राएरुभारी न उम की मपन पडि भानकर भवे की। रने उम रमे क केरे दिया।

षरी ररु रन पर वोरक उलाग क किनार रेरुवेरु राएपडु क केरेकर उमकी पडा नी पाम क गेवे मपी-उले-मन मुदि भेए लने गेरी। भेए लकेर एग वरु वपिम मु रली घी, उग उमन रपिा कि उमका पडि उलाग म केरु ररी पर एक भापे क गिल क पाम भेरेरु को उमक भाप भौरक अनियल भापे गरुन निकलकर रुव पा ररुडा था। एक ररुग भापे ही मपन गिल म निकल कर डन डलौव वेकी गेरे था। रने भेगउगीउ रुरेली घी।

गिल वला भापे पए वल भापे म केरु ररुडा था, "ररु उ उउउन मेवगं मरु राएरुभार का एीवन कृनेभकर ररुडा रु?"

पए वला भापे गले, "उ ही उ उम गिल भौरु मरुकलम क रेपिउ कर ररुडा को।"

गिल वला भापे गले, "उ केरु उमभारु रुक उरु पए म निकालन की ररु किमी क ही भालभ नलीं करे ही वरुकिराएरुभार क उकाली रुं काणी की ररु पिलाकर उरु भार मकडु को।"

पए वला भापे गले, "उरु ही उ गेरु डले रलकर करे ही भार मकडु को।"

उम उरु रने उरु एक ररुग के छंद पले दिया। राएरुन न रने की गउभनू ली घी। उमन उनकी गउरु विणिव भेकी रने का नाम कर दिया। उमका पडि ही नीरगे रु गेवा, उर गिल भ मभेरु-रुग कलम पाकर गरीगी ही ररु रु गेरी। उग, रने मपन रमे क गेल दिया राएपडु क भाउ-पिडा न उनका भद्रुगउ किया।

मनरुड - विरु केरु रला